National Journal of Multidisciplinary Research and Development
www.multidisciplinaryjournal.org
ISSN: 2455-9040
Received: 26-09-2023, Accepted: 12-10-2023, Published: 28-10-2023
Volume 8, Issue 2, 2023, Page No. 170-172

स्त्री अस्मिता संघर्ष और जिजीविषा का सशक्त रूप–छिन्नमस्ता

सुशीला बाई[1], कविता भाटिया मेहता[2]
[1] शोधार्थी, हिंदी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, भारत
[2] शोध निर्देशक, हिंदी विभाग, मिरांडा हाउस कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, भारत

सारांश
प्रभा खेतान बीसवीं शताब्दी के अन्तिम दशक की बहुचर्चित उपन्यास लेखिका है। आज हमारा युगबोध बदल गया है, जीवन पद्धतियाँ बदल गयी है। इसलिए स्त्री–पुरुष संबंधों में समीकरण की तलाश है। हिंदी साहित्य के आरम्भिक काल की रचनाओं में स्त्री को केवल विलासिता का पर्याय माना गया है। लेकिन आधुनिक काल में हिंदी साहित्य में नारी–लेखन आने के बाद नारी साहित्य का विषय बना। स्त्री सशक्तिकरण का सबसे बुलन्द नारा है साहित्य में स्त्री अस्मिता का प्रभाव। आधुनिक युग के उपन्यासों में दिखाई देने वाली एक नयी समस्या है– अस्मिता का बोध। अस्मिता माने अपनी सत्ता की पहचान। स्त्री–विमर्श की प्रखर चिन्तक और उपन्यासकार प्रभा खेतान का चर्चित उपन्यास है 'छिन्नमस्ता' इस उपन्यास में एक ऐसी स्त्री का जीवन संघर्ष है जो पुरुष–प्रधान समाज में पुरुषों के वर्चस्व के विरूद्ध अपनी अलग पहचान और जमीन बनाना चाहती है। पुरुष ने मानसिक और शारीरिक इन दोनों स्तरों पर स्त्री का निरन्तर शोषण किया है। 'छिन्नमस्ता' उपन्यास की नायिका प्रिया इन दोनों मोर्चों पर पुरुष के शोषण से मुक्त होना चाहती है। प्रभा खेतान की नायिका प्रिया अपने आत्मविश्वास और परिश्रम के कारण वह समाज में अपनी पहचान बनाने में सफल होती है। आत्मनिर्णय और नए संकल्पों से निर्मित यह नारी पात्र नये नारीवाद का एक प्रतीक है। इस उपन्यास के सभी स्त्री पात्र स्त्री अस्मिता के अटूट उदाहरण है।

मूल शब्दः अस्तित्व, अस्मिता, स्त्री अस्मिता, स्त्री, विद्रोह, संघर्ष, पितृसत्ता, अधिकार, स्वतंत्रता, आत्मबोध, स्वावलम्बी, मुक्ति, प्रभा खेतान

मूल आलेख

'अस्मिता' शब्द 'स्व' की पहचान अथवा 'अपने अस्तित्व की पहचान' के अर्थ में जाना जाता है। उपनिषदों में 'आत्मने विद्धि' अर्थात् 'अपने को जानों' की बात कही गई हैं तथा श्रीमद्भगवद् गीता भी आत्मज्ञान को सबसे महत्त्वपूर्ण मानती है। कार्ल यॉस्पर्स का कथन है ''अस्तित्व कोई विचार नहीं, बल्कि अनुभूति का सर्वाधिक ठोस रूप है। इसका रूप सूक्ष्म विचारों की तरह निराकार नहीं होता। विश्व में अपने को असीम सत्ता के रूप में जानना, अपने अस्तित्व को अतिक्रांत कर हमें एक ऐसी सत्ता की ओर जागरूक बनाना है, जो सृजना की संभावनाओं, अर्थ और आशा से भरी है।''[1]

स्त्री अस्मिता से अभिप्राय स्त्री के 'स्व' के अस्तित्व या उसकी पहचान से है। मनुष्य अपने अस्तित्व की पहचान लिंग, जाति, समाज, धर्म, देश आदि के आधार पर करता है। पुरुष से शारीरिक स्तर पर भिन्न स्त्री भी एक सम्पूर्ण मानव है, जो अपनी आंतरिकता, वैयक्तिकता तथा स्वतंत्रता के द्वारा जीवन के उच्चतम सोपानों को साधकर अपने अस्तित्व की पहचान बनाती रही है। मातृसत्ता प्रधान युग में यह देखा जा सकता है, किन्तु वैदिक युग के पश्चात् शनैरू शनैरू नारी के अस्तित्व की पहचान खत्म होती चली गई और वह मानव के रूप में अस्वीकृत हो वस्तु अथवा भोग्या के रूप में ही स्वीकृत हो गई। स्त्री वस्तु नहीं है, वह भोग्या नहीं है, वह मात्र पुरुष के संबंधों के आधार पर संबोधित की जाने वाली चीज़ें नहीं है, वह पुरुष की संपत्ति ओर उसके सम्मान की प्रतीक हैं वह भी एक मानव है, उसकी भी अपनी अस्मिता है। यह आधुनिक काल में देखा जा सकता है।

स्त्रियों का अपनी अस्मिता के लिए संघर्ष उतना ही पुराना है, जितनी पुरानी पितृसत्तात्मक व्यवस्था है। पितृसत्ता अगर स्त्रियों को पुरुषों के अधीन रखने के लिए तमाम तरह के बंधनों में जकड़ देने का नाम है तो स्त्री–अस्मिता उन बंधनों से मुक्त होने के लिए विद्रोह करने और स्त्री–पुरुष की समानता के लिए संघर्ष करने का नाम है। स्त्री अस्मिता इस अर्थ में विशिष्ट है क्योंकि वह अपनी मुक्ति को जितना नैतिक दायित्व मानती है उतना ही वैचारिक और राजनीतिक भी मानती है। मनीषा कुलश्रेष्ठ कहती हैं– ''स्त्री–मुक्ति का सवाल अपने खुद के लिए निर्णय लेने से लेकर मनुष्य के रूप में आजादी से जुड़ा प्रश्न है। स्त्री–मुक्ति सड़े–गले स्त्री–विरोधी, पितृसत्तात्मक, ब्राह्मणवादी, सामन्ती मूल्यों के प्रति विद्रोह भी है।''[2]

'छिन्नमस्ता' (1993) प्रभा खेतान का तीसरा एवं बहुचर्चित उपन्यास है, जो स्त्री की उत्पीड़न एवं स्वावलंबन की कहानी है। आत्मकथात्मक शैली में लिखा गया यह उपन्यास समकालीन हिंदी उपन्यास जगत् में विलक्षण है। इस उपन्यास में प्रभाजी ने प्रिया, नीना, जुड़ी, कस्तूरीदेवी, दाई माँ, तिलोतमा, सरोज आदि नारी पात्रों को लेकर उसके कथानक को पूर्ण आकार दिया है। 'छिन्नमस्ता' की नायिका प्रिया की शादी से पूर्व की कहानी प्रभाजी की खुद की कहानी है। उच्चवर्गीय मारवाड़ी परिवार में जन्मी प्रिया का बचपन उपेक्षित, कुंठित एवं भयभीत सहमी हुई लड़की का बचपन है। बचपन से ही प्रिया के जीवन में यातनाओं का दौर शुरू हो गया। हर समय, हर पल एवं हर राह पर सताई जाने वाली प्रिया के शारीरिक शोषण की कहानी उसके परिवार से ही शुरू होती है। प्रिया अपने ही घर में अपने बड़े भाई की वासना का शिकार होती है। भाई द्वारा अस्मत खोई बहन का वर्णन करने वाली प्रभा खेतान पहली लेखिका है। प्रभा खेतान कहती है–''सवाल उठता है कि स्त्री जब योन उत्पीड़न पर कुछ कहना चाहती है तो पुरुष व्यवस्था उसका विरोध क्यों करती है? व्यवस्था इतनी आतंकित क्यों होती है।''[3] वह अपने भाई द्वारा किए गए अपराध के बारे में किसी से कुछ नहीं कहती है क्योंकि दाई माँ उससे कहती है–''सुन बिटिया! हमारा कहा मान और जिंदगी में ई सब बात किसी से न कहियों। आपन पति परमेसर से भी नहीं।''[4]

प्रिया अपनी बची जिन्दगी अपनी इच्छानुरूप जीने के लिए और सामाजिक बन्धनों को तोड़ने की कोशिश करती है। वह पुरुष से तथा पुरुष प्रधान समाज से संघर्ष करके अपनी अस्मिता की रक्षा करती है। समाज में अपनी पहचान बनाने में सफल होती है। पीड़ा और त्रासदी से झुलकर भी जिन्दा है और सारी विरोधी

परिस्थितियों से लड़ने के लिए उसमें हिम्मत और आत्मविश्वास है। प्रिया कहती है– ''मैंने दुख झेला है। पीड़ा और त्रासदी में झुलसी हूँ। जिस दिन मैंने त्रासदी को ही अपने होने की शर्त समझ लिया, उसी दिन उस स्वीकृति के बाद मैंने खुद को एक बड़ी गैर जरूरी लड़ाई से बचा लिया। कुछ के प्रति यह मेरा समर्पण था। सारे जुल्मों के सामने ––– सलीब पर लटकते मैंने पाया कि मैं अब पूरी तरह जिन्दगी की चुनौतियों का सामना करने के लिए तैयार हूँ।''[5]

कॉलेज में भी प्रिया को प्रोफेसर द्वारा वासना का शिकार होना पड़ता है। परन्तु प्रिया हर चुनौती का सामना करते हुए घरवालों के विरूद्ध जाकर अपनी पढ़ाई को पूरा करती है। वह अपनी जिन्दगी भाभी और अम्मा की तरह घुटन भरी नहीं जीना चाहती, क्योंकि उसने प्रोफेसर चेटर्जी से सिखा था कि ''स्त्री होना कोई अपराध नहीं है, पर नारीत्व की आँसू भरी नियति स्वीकारना बहुत बड़ा अपराध है।''[6] इसी संदर्भ में प्रसिद्ध समाजशास्त्री सिमोन द बोउवार ने 'द सेकंड सेक्स' में कहा है कि–''स्त्री पैदा नहीं होती, बनाई जाती है।''[7]

पढ़ाई के पश्चात् प्रिया की शादी एक सम्पन्न परिवार में होती है। प्रिया को विवाह के बाद के कटु अनुभवों से पता चलता है कि धनी परिवार में विवाह होने पर भी स्त्री के जीवन की विद्रुपताएँ समाप्त नहीं होती। अतः प्रिया व्यवसायिक जगत में प्रवेश करती है क्योंकि वह एक भोग की वस्तु बनकर नहीं रहना चाहती थी। भारतीय परंपरा में निरन्तर स्त्री को प्रेम, समर्पण आदि महान बातें बोलकर स्त्री को घर में बिठाया गया है। नरेन्द्र भी प्रिया के समक्ष प्रेम, ईमानदारी, समर्पण की बात रखकर उसे चारदीवारी के अंदर कैद करना चाहता है। प्रिया अपनी अस्मिता के लिए संघर्ष करती है और नरेन्द्र से कहती है कि ''आपसी ईमानदारी, वफादारी, प्यार, समर्पण कुछ नहीं। सच कहूँ नरेन्द्र ये शब्द भ्रम है। औरत को यह सब इसलिए सिखाया जाता है कि, वह इन शब्दों के चक्रव्यूह से कभी नहीं निकल पाए ताकि युगों से चली आती आहुति की परंपरा को कायम रखे।''[8] अतः प्रिया के विचार पुरोगामी है, वह दबना नहीं चाहती, दकियानुसी, परंपरागत धारणाओं से नारी के पैरों को हमेशा से पितृसत्तात्मक अवस्था ने जकड़ना चाहा परन्तु जब यह नहीं हुआ तो बड़े–बड़े शब्दों में फसाकर उसका शोषण करने का तरीका अपनाया जिससे प्रिया अपने आप को अछुता रखती है।

समाज चाहे कितना भी बदला हो लेकिन स्त्री के बारे में पुरुषों के विचार आज भी वही है। स्त्री का स्वतंत्र होना पुरुष को बर्दाश्त नहीं होता है। नरेन्द्र अपने पति होने का अधिकार प्रिया पर थोपना चाहता है। वह बड़े कठोर शब्दों में कहता है– ''दरअसल तुम्हें इतनी खुली छुट देने की गलती मेरी ही थी। मुझे पहले ही चिड़िया के पंख काट डालने चाहिए थे, पर मैं तुम्हारी बातों में आ गया। तुम्हारे इस भोले चेहरे के पीछे एक मक्कार औरत का चेहरा है।''[9] लेकिन प्रिया इन सब बातों को अनदेखा कर अपने व्यवसाय को आगे बढ़ाती है। प्रिया के इस सम्मान को बढ़ते वह देख नहीं सकता है और वह प्रिया को कोसते हुए नरेन्द्र कहता है–''पैसा कमाना तुम्हारी हवस है प्रिया! तुम नारसिसिस्ट हो। तुम्हारी महत्वाकांक्षाएँ दिन दूनी, रात चौगुनी बढ़ती जा रही है।''[10] इस पर प्रिया कहती है कि ''क्या महत्वाकांक्षी होना अपराध है? क्या तुम रुपया नहीं कमाते? तुम्हें मेरे रुपए से क्यों जलन हो रही है नरेन्द्र''।[11] महत्वाकांक्षी होना एक इंसान का हक है। पुरुष का महत्वाकांक्षी होने पर कोई सवाल नहीं करता लेकिन जब एक स्त्री महत्वाकांक्षी बनकर अपने भाग्य खोजने के लिए आगे आती है तो उसे दबाने के लिए पुरुष सभी मोहरों को जुटाता है। इसी संदर्भ में 'सिमोन द बोउवार' कहती है कि ''आर्थिक स्वतंत्रता के अभाव में स्त्री की स्वतंत्रता सिर्फ अमूर्त और सैद्धांतिक रह जाती है। आर्थिक आत्मनिर्भरता स्त्री स्वातंत्र्य का दरवाजा है।''[12] 'छिन्नमस्ता' की स्त्रियां आर्थिक स्वायत्तता के माध्यम से पुरुष समाज में अपनी जगह बनाती है।

नीना प्रभा खेतान का ऐसा पात्र है जो जीवन को निरीह, असहाय नहीं बल्कि सशक्त और आधुनिक रूप में देखती है। वह मूक दर्शक बनकर सहन करने को तैयार नहीं है। ''देखा भाभी पापा चाहते हैं कि मेरी शादी हो जाए, लेकिन मैं नहीं करूंगी। मैं पहले अपने पैरों पर खड़ी होऊंगी।''[13] जूडी कहती है कि हम पश्चिमी औरत ने भी बहुत सहा है जब हमारे घर उजड़े बच्चों ने साथ छोड़ा, साठ वर्ष का पुरुष केवल पैसे के बल पर बीस वर्ष की लड़की के लिए घूमने लगा, तब हम भी तिलमिला उठीं भोग का नंगा नाच और उसमें शामिल हमारी बहनें और बेटियां भी। जूडी कहती है कि प्रिया ''एक तुम ही नहीं दुःख पा रही हो हर औरत के अपने–अपने दर्द के तहखाने हैं।''[14]

समकालीन परिवेश में प्रिया हर स्त्री के लिए प्रेरणादायक एवं प्रेरक शक्ति है। आम स्त्री की तरह अपने हालातों से समझौता कर चूप रहनेवाली नहीं हैं प्रिया अच्छी तरह जानती है कि एक स्वावलम्बी स्त्री के लिए अपनी पारंपरिक सीमाओं को तोड़ना बहुत जरूरी है। वह जानती है कि कोई भी पुरुष स्त्री के स्थान की पूर्ति नहीं कर सकता है इस संदर्भ में अपने दोस्त फिलिप से प्रिया कहती है– ''पुरुष भूमि है, आकाश है, हवा है, अग्नि है, जल है लेकिन स्त्री बीज बनकर धरती के नीचे दबना जानती है, वक्त आने पर अंकुरित होती है और फिर शाखा–प्रशाखाओं में फैलती हुई पूरा जंगल हो जाती है।''[15] 'छिन्नमस्ता' उपन्यास की कहानी स्त्री के अस्तित्व एवं आत्मबोध की है। स्त्री के जीवन राह में आने वाली हर चुनौतियों से संघर्ष करती और अपनी अस्मिता की पहचान करती है। स्त्री के इर्द–गिर्द जो भी संबंध बंधन है उनका विरोध संघर्ष करती हुई, किसी भी संबंध को अपनी शर्तों पर बना रखनेवाली स्त्री के इस आधुनिक रूप को देख वैशाली देशपांडे लिखती है–''प्रिया का यह व्यवहार आधुनिक नारी के उस रूप को उद्घाटित करता है, जो पुरुष प्रधान समाज के अत्याचार के विरोध में खड़ी रहकर अपनी क्षमता को साबित करती है। शोषण के सामने चुनौती बनकर खड़े रहने की क्षमता आज की नारी में आ चुकी है और प्रिया उस नारी का प्रतिनिधित्व कर रही है।''[16] 'छिन्नमस्ता काश! इस उपन्यास को मैं फिर से लिख पाऊँ' लेख में प्रभा खेतान लिखती है साधारण मानवीय रूप में मेरी नायिका प्रिया अपनी व्यथा को कहती है और हमें कहते कहते अपने एक त्रासद अतीत से उबारती है। समाज के अनुसार उसे मर जाना चाहिए था, टूट जाना चाहिए था। उसका सर तो पहले ही कट चुका था, लेकिन फिर भी वह छिन्नमस्ता देवी अपने रक्त से परिवेश से और अन्ततः अपने पति से लड़ती हुई अपनी जिन्दगी बनाती है क्योंकि मेरे जीवन की सबसे बड़ी प्रेरणा रही है कि स्त्री अपनी मानवीय गरिमा के लिए संघर्ष करे, उसे जगत में अपने होने के माध्यम से हासिल करके रहे।

प्रिया अपने प्रखर व्यक्तित्व के प्रभाव से आनेवाली स्त्री समाज की नई पीढ़ी को और भी सशक्त एवं सफल बनाना चाहती है। आधुनिक नारी शक्ति की पहचान बनकर अपने निराले व्यक्तित्व से सदियों से शोषित पीड़ित नारी की पंक्ति से अलग करने में समर्थ बनी है। प्रिया के माध्यम से ज्ञात होता है कि सम्मान कोई देता नहीं, उसे खुद हासिल करना पड़ता है। हर दिशा से उपेक्षा का भाव मिलने पर भी वह अपनी जिन्दगी हँसते हुए जीती नज़र आती है। उसका यह आशावादी नज़रिया सब स्त्री के लिए दृष्टान्त है। आज की पीड़ित, तड़पती नारी में आत्मबल एवं स्वाभिमान भरने का स्तुत्य कार्य करने में यह सक्षम तथा सफल हुआ है। स्त्री के शिक्षित एवं आर्थिक रूप से स्वावलंबी बनने से कोई मूलभूत परिवर्तन न आनेवाले हैं, जरूरत है समाज में इस मानसिकता को बदलने की, जिसमें स्त्री को पुरुष से भिन्न समझा जाता है। नारी जीवन के इस संघर्ष को लेकर डॉ– मधु सन्धु लिखती है कि–''छिन्नमस्ता, नारीयातना, विद्रोह एवं मुक्ति की गाथा है।''[17]

निष्कर्ष

प्रभा खेतान आधुनिक युग की चर्चित नारीवादी लेखिकाओं में से एक है। उनका सम्पूर्ण साहित्य चिंतन प्रधान है। रचना कौशल में नवीनता है। कथ्य की मजबूती है। भारतीय स्त्री की स्थिति के साथ–साथ प्रभा खेतान ने दूसरे देशों की स्त्री की यथास्थिति को भी उकेरा है। प्रभा खेतान की स्त्री व्यवस्था की मार झेलती हुई त्रस्त जीवन से बाहर आने के लिए संघर्षरत है। प्रभा खेतान की स्त्रियाँ अस्मिता के प्रति जागरूक है। वह सवाल करती है कि पुरुष की तरह वह भी एक स्वतंत्र इकाई है, फ़िर उसे पीछे क्यों धकेला जाता रहा है? प्रभा खेतान के 'छिन्नमस्ता' उपन्यास में स्त्री अस्मिता से संबंधित विविध आयाम स्त्री जीवन के तनाव व कुंठा, दांपत्य जीवन की विसंगतियों, संघर्ष, आक्रोश, अपनों द्वारा आहत जीवन, स्त्री जीवन की यातनाएँ आदि का यथार्थ पृष्ठभूमि पर चित्रण किया है। प्रिया, नीना, दाई माँ, कस्तूरीदेवी, जुड़ी, सरोज आदि स्त्री पात्र स्त्री अस्मिता के अटूट उदाहरण है।

संदर्भ सूची

1. अर्चना वर्मा– अस्मिता–विमर्श का स्त्री–स्वर, प्रकाशक मेधा बुक्स, प्रथम संस्करण 2008, पृष्ठ संख्या–79.
2. सुभाष सेतिया – स्त्री–अस्मिता के प्रश्न, सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली, 2009, पृष्ठ संख्या–102.
3. डॉ. ऊषा किर्ती राणावत – प्रभा खेतान का औपन्यासिक संसार, वाणी प्रकाशन 2015, प्रथम संस्करण, पृष्ठ संख्या–47.
4. प्रभा खेतान – छिन्नमस्ता, राजकमल प्रकाशन, पटना, 1993, पृष्ठ संख्या–11.
5. प्रभा खेतान – छिन्नमस्ता, राजकमल प्रकाशन, पटना, 1993, पृष्ठ संख्या–9.
6. प्रभा खेतान – छिन्नमस्ता, राजकमल प्रकाशन, पटना, 1993, पृष्ठ संख्या–44.
7. प्रभा खेतान – स्त्री: उपेक्षिता सीमोन द बोउवार, हिन्दी अनुवाद, 1992, पृष्ठ संख्या–89.
8. प्रभा खेतान – छिन्नमस्ता, राजकमल प्रकाशन, पटना, 1993, पृष्ठ संख्या–11, 12.
9. प्रभा खेतान – छिन्नमस्ता, राजकमल प्रकाशन, पटना, 1993, पृष्ठ संख्या–117.
10. प्रभा खेतान– छिन्नमस्ता, राजकमल प्रकाशन, पटना, 1993, पृष्ठ संख्या–124.
11. प्रभा खेतान– छिन्नमस्ता, राजकमल प्रकाशन, पटना, 1993, पृष्ठ संख्या–13.
12. प्रभा खेतान– स्त्री: उपेक्षिता सीमोन द बोउवार, हिन्दी अनुवाद, 1992, पृष्ठ संख्या–47.
13. प्रभा खेतान – छिन्नमस्ता, राजकमल प्रकाशन, पटना, 1993, पृष्ठ संख्या–144.
14. प्रभा खेतान– छिन्नमस्ता, राजकमल प्रकाशन, पटना, 1993, पृष्ठ संख्या–187.
15. प्रभा खेतान – स्त्री: उपेक्षिता सीमोन द बोउवार, हिन्दी अनुवाद, 1992, पृष्ठ संख्या–211.
16. डॉ. वैशाली देशपांडे – स्त्रीवाद और महिला उपन्यासकार, विकास प्रकाशन, कानपुर, 2017, पृष्ठ संख्या–97.
17. डॉ. मधु सन्धु – महिला उपन्यासकार, शोधपरक ग्रंथ 2000, पृष्ठ संख्या–48.
18. गोपाल राय – हिन्दी उपन्यास का इतिहास, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2016, पृष्ठ संख्या–426.